संपादकीय

नई तालीम पर शिक्षा विमर्श के इस विशेषांक को आपके सामने रखते हुए मुझे बहुत खुशी हो रही है। यह विशेषांक स्वराज और उससे जुड़ी शिक्षा - नई तालीम - के बारे में पाठकों को, एक नए दृष्टिकोण से अवगत कराता है।

एक खास ढंग से, वर्तमान और पिछला वर्ष औद्योगिक सभ्यता की विफलता के विषादपूर्ण परिप्रेक्ष्य को हमारे सामने उजागर कर रहा है। 1945 में महात्मा गाँधी ने जवाहरलाल नेहरू को लिखा, ''... ये हो सकता है कि भारत भी; एक पतंगे की तरह, जो आग में गिरकर मरने के पहले, आग के चारों ओर और भी तेजी से घूमने लगता है, मर जाएगा; मेरा तो कर्तव्य है कि भारत की ऐसे ध्वंश से रक्षा करना और भारत के ज़रिये पूरी पृथ्वी को बचाना।''

आज की वर्तमान चुनौतियाँ गाँधी जी के उस लौकिक पतंगे की याद दिलाती हैं और ऐसा लगता है कि हम सब ध्वंश होने से पहले एक आख़िरी ख़तरनाक खेल खेल रहे हैं।

आज का अनवरत चल रहा जलवायु संकट; वायुमंडलीय कार्बनडाइऑक्साइड का लगातार बढ़ता स्तर, भारत और एशिया के अन्य भागों में हाल ही में आई बाढ़ें; ऑस्ट्रेलिया, कैलिफोर्निया और साइबेरिया के जंगलों में लगी आग; अफ्रीका और एशिया में टिड्डियों का प्रकोप; आर्कटिक और कनाडा में अत्यधिक गरम लपटों का चलना; और इन सबके साथ-साथ असमानता और ग़रीबी के संकट; बढ़ता हुआ शरणार्थी संकट, और बहुत सारे स्तरों पर बढ़ती हुई हिंसा और अन्याय को अपने सामने घटित होता हुआ देख रहे हैं।

कई स्तरों पर हो रहे इस विनाश ने गाँधीजी की अच्छे समाज की वैकल्पिक संकल्पना यानी स्वराज की ओर पुनः हमारा ध्यान खींचा है। कोविड-19 की महामारी के दौरान यदि कुछ भी अच्छा है, तो यह है कि- स्वराज को प्राप्त करने का जो लक्ष्य असंभव-सा प्रतीत होता था वह अब इतना कठिन भी नहीं जान पड़ता। उदाहरण के लिए, हम यह समझ रहे हैं कि हम सीमित संसाधनों के साथ भी अच्छे से गुज़ारा कर सकते हैं; स्थानीय अर्थव्यवस्थाओं पर भरोसा कर सकते हैं; पारस्परिक सौहार्द और नए प्रकार के कौशल और मूल्यों पर विचार कर सकते हैं - जैसे अपनी ज़रूरत के कुछ खाद्य पदार्थों का उत्पादन स्वयं करने या जीवन की गुणवत्ता को पैसे कमाने की होड़ से ऊपर रखने पर ध्यान केंद्रित करना। इस महामारी के कारण हमारे जीवन में एक ठहराव आने के पहले से ही संसार में आ रही विपत्तियों से जूझने के लिए दुनिया भर में जिस तरह के कदम उठाए जा रहे थे, आंदोलन और अन्य तरीक़े काम में लिए जा रहे थे, उन्हें एक तरह से स्वराज की स्थापना के लिए आवश्यक संघर्ष की तरह से देखा जा सकता है।

इनमें डी-ग्रोथ[1], सर्कुलर इकोनॉमी[2], डीप इकोलॉजी[3] जैसी संकल्पनाएं और 'इंटेन्शनल इको कम्युनिटीज़', 'फूड सोविरनिटी मूवमेंट्स', 'पर्माकल्चर मूवमेंट्स', 'पार्टिसिपेटरी बजटिंग' जैसे प्रयास और युवा आंदोलन जैसे 'फ्राइडे फॉर फ्यूचर' और 'एक्सटिंक्शन रेबेलियन' कुछ प्रयास हैं।

20वीं शताब्दी के उद्योगवाद की पुरानी रीत - जिसमें भौतिक वस्तुओं के अत्यधिक उत्पादन और प्रकृति के दोहन के बीच गहन पारस्परिक संबंध है, को धरती की क्षमताओं को तहस-नहस किए बिना और लंबे समय तक बनाए रखना असंभव है। इस व्यवस्था को अभी तक आधुनिक राष्ट्र-राज्य, आधुनिक शिक्षा के माध्यम से, और विकसित विज्ञान और प्रौद्योगिकी के द्वारा प्रोत्साहित करते रहे हैं। इसलिए यह आवश्यक है कि न केवल उद्योगवाद बल्कि इससे उपजे संस्थानों का सामना किया जाए। इसी संदर्भ में सुजीत सिन्हा का आलेख हम पाठकों को इस बिखराव के आपस में गहराई से जुड़े परिदृश्यों और उनके गाँधीवादी विकल्पों की कल्पना करने के लिए प्रेरित करता है। उदाहरण के लिए, जीवाश्म ईंधन की पर्याप्त आपूर्ति के बिना महानगरों को सुचारू रूप से चलाना संभव नहीं होगा। काम करने के तरीकों में निश्चित तौर पर बदलाव आएगा। और यह परिवर्तन स्वाभाविक रूप से वर्तमान स्थिति और शिक्षा की प्रकृति के साथ ही इससे जुड़ी प्रणालियों में बदलाव की माँग करेगा।

यहाँ तक कि गाँधीजी ने जब पहली बार नई तालीम की रूपरेखा दी, तो उन्होंने उसे मौन क्रांति के वाहक; युवाओं को समाज को बदलने के दृष्टिकोण के अनुरूप ढालने के एक साधन के तौर पर देखा था।

कनकमल गाँधी, इस भाव को उकेरते हुए लिखते हैं कि, ''महात्मा गाँधी ने जिस नई तालीम की परिकल्पना की थी वह उनके सपनों के भारत और एक अच्छे समाज की कल्पना का एक अभिन्न अंग है... यदि हम समाज के बारे में अपने मौजूदा विचारों और धारणाओं के हिसाब से नई तालीम को व्याख्यायित करने का प्रयास करते हैं, तो यह तय है कि हमें कठिनाई होगी।[4]''

अनिल सेठी के आलेख को इसी संदर्भ में पढ़ा जाना चाहिए। वे गाँधीजी के क्रांतिकारी विचारों की व्यापक परिकल्पना में नई तालीम को रखते हैं और हम पाठकों के सामने एक समृद्ध वैचारिक टूलकिट रखते हैं जिसमें चार विचारोत्तेजक मुद्दे : अभयदान; 'प्रबुद्ध अराजकता (enlightened anarchy)'; 'साम्प्रदायिक धर्म' और 'आधारभूत नैतिकता' के बीच का अंतर; और शिक्षा और स्कूली शिक्षा के बीच का अंतर शामिल हैं।

लॉरा कॉलुक्की-ग्रे, ऐलेना कैमिनो और डोनाल्ड-ग्रे का आलेख स्कॉटलैंड के एबरडीन शहर के एक विद्यालय की बागवानी परियोजना की जाँच-पड़ताल के दौरान अहिंसा, सत्याग्रह और सर्वोदय जैसे गाँधीवादी विचारों के अनुभवों का जीवंत चित्रण है। कृति गुप्ता और मेरा आलेख मेक्सिको के ज़ापतिस्ता आदिवासियों द्वारा काम में ली जाने वाली शिक्षा की प्रकृति पर एक संक्षिप्त समीक्षा है, जो आज की दुनिया में शायद शिक्षा का एकमात्र ऐसा ढाँचा है जो गाँधीजी की

---

1. डीग्रोथ की अवधारणा वैश्विक खपत और उत्पादन (सोश्ल मेटाबोलिस्म) को कम करने की आवश्यकता पर ज़ोर देती है और लोककल्याण, सामाजिक न्याय/समता पर आधारित और पारिस्थितिक रूप से सतत विकास करने वाले समाज का समर्थन करती है, जिसमें समृद्धि का मानक जीडीपी नहीं बल्कि लोगों की खुशहाली होती है।

2. 'दोहन-उत्पादन-अवशेष' (टेक-मेक-वेस्ट) के रेखीय मॉडल के विपरीत, सर्कुलर अर्थव्यवस्था की रूपरेखा पुनरुत्पादन पर बल देती है। इसका मानना है कि विकास का अर्थ केवल सीमित संसाधनों की लगातार खपत करना नहीं है, बल्कि यह अपशिष्टों और प्रदूषण को कम करने, उत्पादों और संसाधनों के समझदारीपूर्ण उपयोग और प्राकृतिक तंत्रों को पुनर्जीवित करने पर बल देती है।

3. डीप इकोलॉजी का दर्शन सभी जीवों को समान रूप से महत्व देने की बात कहता है। यह अन्य जीवों को मनुष्य के हित को केंद्र में रखकर देखने के बजाय उन्हें उनके अपने वजूद और अपनी अहमियत को केंद्र में रखकर देखने की बात करता है।

4. साइक्स, एम. (1988) : ''द स्टोरी ऑफ नई तालीमः फिफ्टी ईयर्स ऑफ एडुकेशन'' इन सेवाग्राम, 1937-1987 : ए रिकॉर्ड ऑफ रिफलेक्शन, सेवाग्राम, वर्धा : नई तालीम समिति।

नई तालीम की मौलिक योजना के सबसे क़रीब है। अदिति ठाकुर और शंकर पूर्बे ने बिहार के पश्चिम चामरा में 13 स्कूलों के समूह में नई तालीम को पुनर्जीवित करने के प्रयोग के दौरान अपने अनुभवों को लेख में समेटा है।

इस अंक में जहाँ एक ओर हम दुनिया भर में नई तालीम को लेकर हो रहे वर्तमान प्रयासों और ऐसा करने की ज़रूरत के सैद्धान्तिक पक्ष के बारे में वैचारिक विमर्श करते हैं, वहीं यह ऐसे प्रयासों में भागीदार 'कर्मियों' को भी समर्पित है। यह ऐसे सभी शिक्षकों और सुगमकर्ताओं के नाम है जो वर्तमान की जटिल चुनौतियों का सामना करने के लिए गाँधीवादी विचारों पर काम करते हैं और उन्हें अमल में लाते हैं और जिन्होंने भविष्य के एक स्वाभाविक पुनरुत्थान के उद्देश्य से नई तालीम के परिवर्तनकारी पहलू को जीवित रखा है।

इसलिए, हमारे इस अंक में ग्रामीण कर्नाटक के सरकारी स्कूलों में जल संरक्षण के प्रयासों के माध्यम से शिक्षा देने के बारे में अदिति हस्तक की लिखी रचना है; साथ ही ध्रुव देसाई द्वारा मरुदम विद्यालय, तमिलनाडु में खेती, बागवानी और वनरोपण के प्रयासों के माध्यम से सीखने-सिखाने के अनुभव से उपजा एक लेख है।

नवेंदु मिश्रा, गौरव जायसवाल, और शिरीष कुमार का आलेख बच्चों द्वारा अपने गाँव के नरेगा खातों के विश्लेषण के ज़रिये प्रशासन में स्थानीय भागीदारी के बारे में सीखने को विस्तार से बताता है; इसके अलावा, रोशनी रवि और मैं कुछ शिक्षकों के अनुभवों को आप तक पहुँचा रहे हैं जब वे शिक्षक बैंगलोर के शहरी स्कूल में खेती के माध्यम से पढ़ने के अपने अनुभवों के माध्यम से बताते हैं कि आज के समय में नई तालीम का शिक्षक होने के क्या मायने हैं। आधारशिला लर्निंग सेंटर, मध्य प्रदेश में बायोगैस संयंत्र की स्थापना के माध्यम से सीखने के बारे में क्रिसटियन कैसिलस द्वारा लिखा एक रोमांचक और प्रेरणादायक वृत्तान्त उपलब्ध कराता है। आगे ऋषभ मिश्रा द्वारा लिया गया सुषमा शर्मा का साक्षात्कार शामिल है, जिन्होंने वास्तविक नई तालीम विद्यालय- आनंद निकेतन को सेवाग्राम में फिर से शुरू किया और आज के समय में उस विचार को जीवित रखा है। साथ ही शरद ताकसांडे लिखते हैं कि आनंद निकेतन, सेवाग्राम के शिक्षकों ने लॉकडाउन के दौरान भी आनुभाविक और प्रासंगिक शिक्षण को कैसे जीवंत बनाए रखा।

इसलिए यह विशेषांक उन सभी महत्वपूर्ण शिक्षकों का अभिनंदन करता है, जो सीखने-सिखाने की अपनी रोज़मर्रा की कार्यप्रणाली में भविष्य की कल्पना को ध्यान में रखते हैं, क्योंकि सीखने-सिखाने के दौरान वे नन्हें युवा छात्रों को न केवल वर्तमान के परिवर्तनों के प्रति उदार होने या आने वाले समय के प्रति अनुकूल होने के लिए तैयार करते हैं बल्कि वास्तव में नई और बेहतर दुनिया को आकार दे रहे होते हैं।

निश्चित रूप से यह शिक्षा विमर्श के साथ जुड़े हम सभी लोगों के लिए गाँधी के स्वराज के विचार पर चिंतन-मनन करने का एक अवसर है और इसमें केन्द्रीय बिन्दु के तौर पर कैसे 'कर्म' पर ज़ोर दिया गया है यह समझना है।

यही कारण है कि उनके जीवनी लेखक लुई फिशर ने एक बार टिप्पणी की थी 'गाँधी के व्यक्तित्व में कुछ भी निष्क्रिय नहीं था और उन्हें निष्क्रिय प्रतिरोध जैसे शब्द बिलकुल नापसंद थे!' ◆

पल्लवी वर्मा पाटिल
अतिथि संपादक

भाषान्तर : मधुलिका झा